पाठ - बस की यात्रा

शब्दार्थ -

1. डाकिन - डराने वाली
2. श्रद्धा - किसी के प्रति आदर, सम्मान और प्यार का भाव
3. उमड़ - जमा होना
4. वयोवृद्ध - उम्र में बूढ़ा या पुराना
5. वृद्धावस्था - बुढ़ापा
6. सवार - चढ़ा
7. हिस्सेदार - साझेदार
8. विश्वसनीय - भरोसे वाला
9. सविनय अवज्ञा आंदोलनों - गाँधी जी द्वारा चलाया गया 1921 का आंदोलन
10. ट्रेनिंग - सीख
11. दौर - ज़माने
12. असहयोग - साथ न देना
13. लुभावने - सुन्दर
14. गोता - डुबकी
15. इत्तफ़ाक - संयोग
16. क्षीण - कमज़ोर
17. ग्लानि - खेद
18. प्राणांत - मरना
19. बियाबान - सुनसान
20. अंत्येष्टि - अंतिम क्रिया
21. ज्योति - रोशनी
22. श्रद्धाभाव - सम्मान के साथ
23. जान हथेली पर लेकर - बहुत खतरा लेना
24. उत्सर्ग - बलिदान
25. दुर्लभ - जो कम मिलता हो
26. पसारे - फैलाए
27. प्राण - जान
28. लोक - मृत्यु लोक

egyanarchive

29.प्रयाण - प्रस्थान (जाना)
30.बेताबी - बेचैनी
31.तनाव - चिंता

प्रश्न १ - कारण बताएँ

"मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"
लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई?

उत्तर –

लेखक के मन में बस कंपनी के हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह टायर की स्थिति से परिचित होने के बावजूद भी बस को चलाने का साहस जुटा रहा था। कंपनी का हिस्सेदार अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ़ कर रहा था। अर्थ मोह की वजह से आत्म बलिदान की ऐसी भावना दुर्लभ थी जिसे देखकर लेखक हतप्रभ हो गया और उसके प्रति उनके मन में श्रद्धा भाव उमड़ता है।

प्रश्न 2: कारण बताएँ

"लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते।"
लोगों ने यह सलाह क्यों दी?

उत्तर - लोगों ने लेखक को यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वे जानते थे की बस की हालत बहुत खराब है। बस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रूक जाए, शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

egyanarchive

प्रश्न 3: कारण बताएँ

"ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"
लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उत्तर - जब बस चालक ने इंजन स्टार्ट किया तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भीतर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो। अर्थात् इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जो की भांति बस के यात्री हिल रहे थे।

प्रश्न 4: कारण बताएँ

"गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।"
लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर - बस की वर्तमान स्थिति देखते हुए इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करना स्वाभाविक था। देखने से लग नहीं रहा था कि बस चलती भी होगी परन्तु जब लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी।

प्रश्न 5: कारण बताएँ
"मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।"
लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था?
उत्तर – बस की जर्जर अवस्था से लेखक को ऐसा महसूस हो रहा था कि बस की स्टीयरिंग कहीं भी टूट सकती है तथा ब्रेक फेल हो सकता है। ऐसे में लेखक को डर लग रहा था कि कहीं उसकी बस किसी पेड़ से टकरा न जाए। एक पेड़ निकल जाने पर वह दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता था कि बस कहीं इस पेड़ से न टकरा जाए। यही वजह है कि लेखक को हर पेड़ अपना दुश्मन लग रहा था।

प्रश्न 6: 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' किसके नेतृत्व में, किस उद्देश्य से तथा कब हुआ था? इतिहास की उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर लिखिए।
उत्तर – 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 1930 में अंग्रेज़ी सरकार से असहयोग करने तथा पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए किया गया था।

प्रश्न 7: सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है? लिखिए।
उत्तर – 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' 1930 में में सरकारी आदेशों का पालन न करने के लिए किया था। इसमें अंग्रेज़ी सरकार के साथ सहयोग न करने की भावना थी।
लेखक ने 'सविनय अवज्ञा' का उपयोग बस के सन्दर्भ में किया है। वह इस प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से यह बताना चाह रहा है कि बस विनय पूर्वक अपने मालिक व यात्रियों से उसे स्वतंत्र करने का अनुरोध कर रही है।

egyanarchive

भाषा की बात

प्रश्न 1: बस, वश, बस तीन शब्द हैं – इनमें बस सवारी के अर्थ में, वश अधीनता के अर्थ में, और बस पर्याप्त (काफी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है,
उपर्युक्त वाक्यों के समान वश और बस शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।
उत्तर –
वश – आज-कल के बच्चों को समझाना सबके वश की बात नहीं।
वश – भगवान की करनी मनुष्य के वश में नहीं।
बस – बस करो, कितना खाओगे?
बस – बस करो, इतना काफी है।